

# डायरी का एक पन्ना

## कलास -१०

पाठ का नाम - डायरी का एक पन्ना

पाठ 2

PPT-5

# प्रश्नोत्तर

- (क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25 -30 शब्दों में ) लिखिए  
प्रश्न 1 -: 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या -क्या तैयारियाँ की गईं ?  
उत्तर -: 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए काफ़ी तैयारियाँ की गयी थीं। केवल प्रचार पर ही दो हज़ार रूपए खर्च किये गए थे। कार्यकर्ताओं को उनका कार्य घर - घर जा कर समझाया गया था। कलकत्ता शहर में जगह - जगह झंडे लगाए गए थे। कई स्थानों पर जुलूस निकाले जा रहे थे और झंडा फहराया जा रहा था। टोलियाँ बना कर लोगों की भीड़ उस स्मारक के नीचे इकठ्ठी होने लगी थी ,जहाँ सुभाष बाबू झंडा फहराने वाले थे और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने वाले थे ।
- प्रश्न 2 -: 'आज जो बात थी ,वह निराली थी '- किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।  
उत्तर -: आज का दिन निराला इसलिए था क्योंकि आज के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और इस साल भी फिर से वही दोहराया जाना था। सभी मकानों पर हमारा राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे हमें स्वतंत्रता मिल गई हो। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की कोशिश में लगी हुई थी।

# प्रश्नोत्तर

- प्रश्न 3 -: पुलिस कमिश्नर के नोटिस और काँसिल के नोटिस में क्या अंतर है ?  
उत्तर -: पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि अमुक - अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। यदि कोई सभा में जाता है तो उसे दोषी समझा जायेगा। काँसिल की ओर से नोटिस निकला था कि स्मारक के निचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। इस तरह दोनों नोटिस एक दूसरे के विरुद्ध थे।
- प्रश्न 4 -: धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया ?  
उत्तर -: जब सभाष बाबू को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की ओर चल पड़ीं परन्तु पुलिस की लाठीचार्ज ने कुछ को घायल कर दिया, कुछ को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ पहले तो वहीं धर्मतल्ले के मोड़ पर ही बैठ गईं। बाद में उन्हें पुलिस पकड़ कर ले गई। इस कारण धर्मतल्ले के मोड़ पर आ कर जुलूस टूट गया।
- प्रश्न 5 -: डॉ. दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे, उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खिचवाने की क्या वजह हो सकती थी ? स्पष्ट कीजिए।  
उत्तर -: डॉ. दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे, उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खिचवाने की दो वजह हो सकती थी। एक तो यह कि अंग्रेजों के अत्याचारों का खुलासा किया जा सकता था कि किस तरह उन्होंने औरतों तक को नहीं छोड़ा। दूसरी वजह यह हो सकती है कि बंगाल या कलकत्ता पर जो कलक था कि वहाँ स्वतंत्रता के लिए कोई काम नहीं हो रहा है, इस कलक को कुछ हद तक धोया जा सकता था और साबित किया जा सकता था कि वहाँ भी बहुत काम हो रहा है।

# प्रश्नोत्तर

- (ख)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50 -60 शब्दों में ) दीजिए
- प्रश्न 1 -: सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी ?
- उत्तर -: सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका थी। स्त्रियों ने बहुत तैयारियां की थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहचाने की कोशिश में लगी हुई थी। स्मारक के निचे सीढ़ियों पर स्त्रियाँ झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी। सुभाष बाबू की गिरफ्तारी के कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगीं। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते - आते जुलूस टट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियाँ वही मोड़ पर बैठ गईं। उन स्त्रियों को लालबाजार ले जाया गया मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पत्नी थी, उसे भी गिरफ्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था।
- प्रश्न 2 -: जुलूस के लालबाजार आने पर लोगों की क्या दशा हुई ?
- उत्तर -: जब सुभाष बाबू को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की ओर चल पड़ीं। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकठ्ठी हो गई। परन्तु पुलिस की लाठियों ने कुछ को घायल कर दिया, कुछ को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ वही धर्मतल्ले के मोड़ पर बैठ गईं। भीड़ ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जखमी हुए। कुछ के सर फटते थे और खून बह रहा था।

# प्रश्नोत्तर

- प्रश्न 3 :- 'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन जोर किस के द्वारा लागू किये गए कानून को भंग करने की बात कही गई है ? क्या कानून भंग करना उचित था ? पाठ के सन्दर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।
- उत्तर :- यहाँ पर अंग्रेज प्रशासन द्वारा सभा ना करने के कानून को भंग करने की बात कही है। ये कानून वास्तव में भारतवासियों की स्वतंत्रता को कचलने वाला कानून था अतः इस कानून का उलघन करना सही था। उस समय हर देशवासी स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार था और अंग्रेजी हुकमत ने सभा करने, झंडा फहराने और जुलूस में शामिल होने को गैरकानूनी घोषित कर दिया था। अंग्रेजी प्रशासन नहीं चाहता था कि लोगों में आजादी की भावना आये परन्तु अब हर देशवासी स्वतन्त्र होना चाहता था। उस समय कानून का उलघन करना सही था।
- प्रश्न 4 :- बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार से यह सब अपूर्व क्यों है ? अपने शब्दों में लिखिए।
- उत्तर :- सभाष बाबू के नेतृत्व में कलकत्ता में लोगों ने स्वतंत्रता दिवस मनाने की ऐसी तैयारियाँ की थी जैसी आज से पहले कभी नहीं हुई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि कोई भी सभा में नहीं जायेगा यदि कोई जाता है तो उसे दोषी समझा जाएगा। परन्तु लोगों ने इसकी कोई परवाह नहीं की और अपनी तैयारियों में लागे रहे। पुलिस की लाठियों से कई लोग घायल हुए, कई लोगों को गिरफ्तार किया गया। स्त्रियों पर भी बहुत अत्याचार हुए, इतिहास में कभी इतनी स्त्रियों को एक साथ गिरफ्तार नहीं किया गया था। इन्हीं बातों के कारण इस दिन को अपूर्व बताया गया।

# प्रश्नोत्तर

- (ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए -:
- (1) आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है। वह आज बहुत अंश में धल गया।  
उत्तर - : कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे। जिस भी रास्तों पर मनष्यों का आना - जाना था, वहीं जोश, खशी और नया पन महसूस होता था। बड़े - बड़े पार्कों और मैदानों को सवेरे से ही पुलिस ने घेर रखा था क्योंकि वही पर सभिए और समारोह होना था। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को तो सबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था, इतना सब कुछ होने के बाबजूद भी कई जगह पर तो सबह ही लोगो ने झंडे फहरा दिए थे। जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकल दिया था कि अमक -अमक धारा के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। लोगो की भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। आदमियों के सर फट गए। पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई। अलग अलग जगहों से स्त्रियां अपना जलूस निकालने और सही जगह पर पहुंचाने की कोशिश में लगी हुई थी। इतना सब कुछ होने पर भी लोगो के सहस और जोश में कमी नहीं आई।

# प्रश्नोत्तर



- (2) खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।
- उत्तर -: जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकल दिया था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई भी, कहीं भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। जो लोग भी काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी अगर उन्होंने किसी भी तरह से सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे। इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकल गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगों को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था। प्रशासन को इस तरह से खुली चुनौती दे कर कभी पहले इस तरह की कोई सभा नहीं हुई थी।



**THANKING YOU**  
**ODM EDUCATIONAL GROUP**